इकाई 1 अफ्रीका : एक परिचय

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 अफ्रीका किस प्रकार अस्तित्व में आया

1.3 अफ्रीका का विकास

- 1.3.1 उत्तरी अफ्रीका
- 1.3.2 पश्चिमी अफ्रीका
- 1.3.3 पूर्वी अफ्रीका
- 1.3.4 केन्द्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका

1.4 प्रारंभिक अफ्रीकी राजतंत्र (राजघराने)

1.5 इस्लाम का विस्तार

- 1.5.1 मिस्र, सूडान और इथियोपिया
- 1.5.2 पश्चिमी अफ्रीका
- 1.5.3 अफ्रीका पर इस्लाम का प्रभाव

1.6 यूरोपीय प्रभाव तथा दास व्यापार

- 1.6.1 उत्तरी अफ्रीका
- 1.6.2 पश्चिमी अफ्रीका
- 1.6.3 दास व्यापार का अंत
- 1.6.4 अफ्रीकी दास प्रथा की विशेषताएँ

1.7 उपनिवेशवाद तथा अफ्रीका के लिए संघर्ष

- 1.7.1 यूरोपीय विस्तार के प्रतिरूप
- 1.7.2 अफ्रीका के लिए संघर्ष (छीना-झपटी)
- 1.7.3 अफ्रीकी समाज पर उपनिवेशवाद का प्रभाव

1.8 आधुनिक अफ्रीका

1.9 सारांश

1.10 अभ्यास

1.1 प्रस्तावना

अफ्रीका अनेक छोटे-बड़े देशों का महाद्वीप है। इस समय इस महाद्वीप में 54 देश हैं (48 देश मुख्य भूमि पर हैं, तथा 6 द्वीप-देश है)। इस महाद्वीप में लगभग 80 करोड़ लोग निवास करते हैं, जोकि विश्व की कुल जनसंख्या का 13 प्रतिशत है। इस महाद्वीप की भूमि सीमा संसार के कुल भूखण्ड की लगभग एक-चौथाई है। यह एशिया के बाद दूसरा सबसे विशाल महाद्वीप है। स्वेज़ नहर के 1869 में निर्मित होने से पूर्व, उत्तर-पूर्वी अफ्रीका सिनाई प्रायःद्वीप के साथ जुड़ा होने के कारण एशिया के साथ जुड़ा हुआ था। अफ्रीका में संसार के कुछ अति उत्तम कबीले निवास करते हैं, तथा वहाँ अनेक श्रेष्ठ संस्कृतियाँ, तथा परस्पर विरोध पाए जाते हैं। जिस समय भारत स्वतंत्र हुआ था, उस समय अफ्रीकी महाद्वीप में केवल चार देश स्वतंत्र थे। जब सन् 1963 में अफ्रीकी एकता संगठन (Organisation of

African Unity – OAU) की स्थापना हुई, तब तक वहाँ स्वतंत्र देशों की संख्या 32 तक पहुँच गई थी। पुर्तगाली उपनिवेशों तथा दक्षिणी प्रायःद्वीप के श्वेतों के देशों (जैसे कि ज़िम्बाब्वे तथा नामीबिया) के स्वाधीन हो जाने के साथ ही स्वतंत्र देशों की संख्या बढ़कर 52 हो गई। इरीट्रिया के इथियोपिया से पृथक हो जाने, तथा दक्षिणी अफ्रीका में जातिभेद की समाप्ति हो जाने पर अब इस महाद्वीप में कुल 54 स्वतंत्र देश हैं। आज अफ्रीका इतिहास के एक संक्रमणशील मोड़ पर है। पिछले आधे दशक में अफ्रीका में अभूतपूर्व राजनीतिक क्रान्ति हुई है, जिसे अलग-अलग नाम दिए गए हैं जैसे कि "परिवर्तन की नई लहर", "एक द्वितीय स्वतंत्रता", तथा "दूसरी अफ्रीकी स्वाधीनता"।

अनेक लोग आज भी गलती से अफ्रीका को "अंध-महाद्वीप" (dark continent) कह देते हैं, जैसे उसका कोई अपना इतिहास, या अपनी कोई संस्कृति, या उपलब्धियाँ ही न हों। परन्तु अफ्रीका का अपना इतिहास है और उसकी अपनी संस्कृति भी है। मानव के उद्भव का विकास इसी महाद्वीप में माना जाता है। उसके विशाल मानव संसाधन थे जिनका दास-व्यापार के कारण नाश हो गया। इसके विशाल और धनी संसाधनों ने अफ्रीका को यूरोपीय उद्योग का निशाना बना दिया। उनके हितों ने न केवल उपनिवेशवाद को उत्पन्न किया, परन्तु महाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में टुकड़े भी कर दिए जैसे कि ऐंग्लोफोन (Anglophone), फ्रैंकोफ़ोन (Francophone) तथा लूसोफोन (Lusophone)। ऐसा महाद्वीपीय स्तर पर हुआ, तथा वह स्थानीय स्तर पर हजारों जातीय और क़बीलाई समूहों में विभाजित हो गया। चूँकि इससे उनके निहित स्वार्थों की पूर्ति होती थी, इसलिए अफ्रीका को "अंध-महाद्वीप" के रूप में प्रस्तुत किया गया।

आधुनिक अफ्रीका जड़ (अचल) नहीं है। वहाँ पर अनेक क्षेत्रीय और आर्थिक संगठन स्थापित किए गए हैं, जैसे कि अफ्रीकी एकता संघ. (Organisation of African Unity – OAU, जिसे अब अफ्रीकी संघ (AU) कहा जाता है), पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका का साझा बाज़ार (Common Market of Eastern and Southern Africa – COMESA), पश्चिम अफ्रीकी राज्यों का आर्थिक समुदाय (Economic Community of West African States – ECOWAS), तथा दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय (Southern African Development Community – SADC), हिन्द महासागर रिम - क्षेत्रीय सहयोग संगठन (Indian Ocean Rim Association for Regional Cooperation – IOR – ARC)। इन संगठनों के माध्यम से अफ्रीका न केवल आंतरिक रूप से एक-दूसरे से सम्पर्क में रहता है, बल्कि शेष संसार के साथ भी उसकी क्रियात्मकता बनी हुई है। अब संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम (Structural Adjustment Programme - SAP), तथा अफ्रीकी विकास की नई भागीदारी (New Partnership for African Development – NAPED) के द्वारा महाद्वीप को विकसित किया जा रहा है।

1.2 अफ्रीका किस प्रकार अस्तित्व में आया

अफ्रीका के इतिहास को लिखने में इन सूचनाओं या जानकारियों का विशेष योगदान रहा जोकि लगभग 500 वर्षों के लम्बे समय में पर्यटकों, व्यापारियों तथा (दास प्रथा करने तथा उपनिवेश स्थापित करने के लिए आए) आक्रामकों की रिपोर्टों से प्राप्त हुईं। जो समाज हजारों वर्ष पूर्व अस्तित्व में थे उन सबके संबंध में इतिहासकारों ने इतिहास की रचना की। अफ्रीका के उपलब्ध इतिहास की कमियों को पूरा करने में आधुनिक विद्वानों ने भूसर्वेक्षकों (archeologists), नृवैज्ञानिकों (anthropologists), तथा भाषा विशेषज्ञों की प्राचीन खोजों और रचनाओं से सहायता ली। उनके प्रयासों के फलस्वरूप इस महाद्वीप के अतीत के विषय में पर्याप्त जानकारी मिल सकी, तथा इतिहासकार विकास की गति

की पहचान कर सके। फिर भी, हमें अब तक अफ्रीका के अतीत का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाया है। न ही दास प्रथा के 'काले युग' के विषय में समुचित ज्ञान प्राप्त हुआ है।

क) भौगोलिक एवं समाजशास्त्रीय पक्ष

अफ्रीका में कृषि के विकास से पूर्व पशुपालन आरंभ हुआ। लगभग 7500 ईसा पूर्व मिस्र के पश्चिमी रेगिस्तान में लोगों ने पशुओं को पालतू बना लिया था। अगले 2000 वर्षों में पशुपालन की प्रथा का केन्द्रीय सहारा मरुस्थल में विस्तार हुआ। वहाँ से इस प्रथा का विस्तार अटलांटिक तट पर (वर्तमान इथियोपिया के ऊपरी क्षेत्रों में) तथा अफ्रीका के कुछ अन्य वन्य क्षेत्रों की सीमाओं तक भी हुआ। सहारा के अनेक भागों में पानी उपलब्ध था जिससे वनों तथा अन्य वनस्पति को मदद मिलती थी। लगभग 6000 ईसा पूर्व मौसम में परिवर्तन होना आरंभ हुआ, और सहारा क्षेत्र मरुस्थल में परिवर्तित होने लगा। यह प्रक्रिया लगभग 4500 वर्ष तक चलती रही, जब तक कि अधिकांश उत्तरी अफ्रीका रेगिस्तान नहीं बन गया। परिवर्तन के इस युग में केन्द्रीय एवं दक्षिणी सहारा में अनेक प्रकार की बस्तियों की स्थापना हुई। इस बात के प्रमाण भी हैं कि वर्ष के विभिन्न अवसरों पर विभिन्न समुदाय एकत्र होकर अपने संसाधनों और कौशल का आदान-प्रदान करते थे। इस प्रकार वे कठिन पर्यावरणीय परिस्थितियों का सामना कर पाते थे। शायद विभिन्न समुदायों के इन संपर्कों के द्वारा ही खाद्य पदार्थों के उत्पादन के तजुर्बे (परीक्षण) आरंभ हुए। लगभग 2500 ईसा पूर्व के पश्चात् अनेक ग्रामीण गडरियों के समूहों (pastoral groups) ने केन्द्रीय, पूर्वी तथा दक्षिणी अफ्रीका में भी पहुँचना आरंभ किया। कृषकों के अभ्युदय से एक हजार वर्ष से भी अधिक पूर्व, इथियोपिया के ऊपरी प्रदेशों (highlands) में पशुपालकों का निवास था। लगभग 1000 ईसा पूर्व, गडरिये (pastoralists) कीनिया की वर्तमान रिफ्ट घाटी में फैल गए थे। लगभग 400 ईसा पूर्व वे वर्तमान तन्ज़ानिया की सीमा तक पहुँच गए। ये लोग 400 ईसा पूर्व केन्द्रीय अफ्रीका में, तथा 200 ई.पू. दक्षिणी अफ्रीका में भी पाए जाने लगे। लगभग 1500 ई.पू. बान्टू-भाषी लोग वर्तमान कैमरून के पूर्वी भाग में आप्रवास कर गए, तथा अंततः वे पूर्व और दक्षिण की ओर चलते हुए केन्द्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका तक पहुँच गए। अपने आप्रवास के साथ ही बान्टू-भाषियों ने अनाज उगाना आरंभ कर दिया, तथा मध्य-सहारा क्षेत्र में लोहे के उत्पादन करने वालों में भी वे अग्रणी रहे।

ख) सामाजिक विकास में धातु का महत्व

अफ्रीका के सामाजिक विकास में धातु संबंधी विकास ने क्रान्तिकारी परिवर्तन किए। धातुओं के प्रयोग से विशेषज्ञता का जन्म हुआ, तथा एक पदसोपानीय समाज (hierarchial society) एवं नए विचारों के विकास को बल मिला। अफ्रीका में नगरों एवं व्यापार के विकास में यह एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ।

प्राचीन मिस्र के लोग तथा न्यूबियाई 2000 ई.पू. से ही काँसा (bronze) नामक धातु को गलाने का कार्य करते थे। यूनानी लोग तथा कार्थेजीनियाई 1000 ई.पू. के बाद, उत्तर अफ्रीका में लोहे और ताँबे की प्रौद्योगिकी को लेकर आए। वहाँ से इसका विकास दक्षिण की ओर नील घाटी तक हुआ। आधुनिक नाईजर (Niger) में सर्वेक्षण से पता चला है कि उप-सहारा (sub-Saharan) अफ्रीका में लगभग 700 ई.पू. में लोहे का उत्पादन होता था। उसके लगभग 100 वर्ष पश्चात् आधुनिक मॉरीटेनिया (Mauritania) के स्थान पर ताँबे को गलाने का कार्य आरंभ हुआ। लोहे का अफ्रीकी सभ्यता पर तुरंत प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए, पश्चिमी अफ्रीका में लोहे के औज़ारों की सहायता से सेनेगल और नाईजर नदियों के निकट की घाटियों में भूमि को साफ किया गया तथा वहाँ बस्तियाँ

बसाई गईं। शायद आदि काल में इस क्षेत्र से लौह-वस्तुओं का व्यापार भी किया गया। लोहे के औज़ारों से जिन क्षेत्रों में बस्तियाँ बसाई गईं उनसे जनसंख्या की वृद्धि हुई। लगभग 300 ई.पू. तक पश्चिमी अफ्रीका के क्षेत्रों में बान्टू निवासियों के मध्य लोहे की प्रौद्योगिकी का विकास हो चुका था। वहाँ से इसका प्रसार केन्द्रीय अफ्रीका में, और फिर पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका में हुआ। दक्षिणी तन्ज़ानिया में विक्टोरिया झील के निकट, तथा दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका में अन्यत्र भी लोहे की ऐसी कलाकृतियाँ पाई गईं जो अनुमानतः 100 ईस्वी से 400 ईस्वी में निर्मित हुई थीं। लगभग 600 ई. तक समस्त अफ्रीका में ऐसी शहरी बस्तियों की स्थापना हो चुकी थी जिनकी विशेषता थी पद-सोपानीय समाज तथा प्रशिक्षित श्रमिक, वस्तुओं का बड़े स्तर पर उत्पादन, लम्बी दूरी का व्यापार और उलझे हुए राजनीतिक संगठन। पश्चिमी अफ्रीका में लम्बी दूरी के व्यापार के विस्तार के साथ मध्य-नाईजर नदी के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों का विकास हुआ। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक अफ्रीका के अनेक भागों में बड़े शहरी केन्द्रों की स्थापना हो चुकी थी।

1.3 अफ्रीका का विकास

1.3.1 उत्तरी अफ्रीका

उत्तरी अफ्रीका में मिस्र (Egypt), सूडान का उत्तरी भाग, लीबिया, ट्यूनीसिया, अल्जीरिया तथा मोरक्को शामिल हैं। अति-प्राचीन पाषाण-युग (stone-age) की कुल्हाड़ियाँ उत्तरी अफ्रीका के विभिन्न भागों में - लाल सागर से लेकर अटलांटिक महासागर तक, तथा भूमध्यसागर के तट से दक्षिण की ओर - पाई गई। सहारा क्षेत्र में इन्हें पुराने झरनों तथा झीलों के किनारों पर भी पाया गया। मध्य पाषाण युग के अवशेषों से पता चला कि सहारा तथा मग़रिब (उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका) में लोग गेंडे, ज़िराफ, घोड़ों, ऐन्टेलोपों (एक प्रकार के मुर्ग़ी) तथा सुन्दर मुर्गों (gazelle) की हत्या (butcher) किया करते थे। पाषाण युग के कुछ ऐसे अवशेष मिले जिनसे अनुमान लगाया गया कि उन्हें पत्थर की उन "मशीनों" से शायद वनस्पति-भोजन को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए पीसा जाता हो। मछली पकड़ने के सबसे प्राचीन प्रमाण नील नदी की घाटी से मिले। वहाँ से मछलियों की हड्डियों और कुछ तो बहुत गहरे पानी की मछलियों के ढाँचें प्राप्त हुए। लगभग 20,000 से 13,000 वर्ष पूर्व की अवधि में भूमध्यसागर तट का स्तर आज की तुलना में काफी नीचे रहा होगा, और मानव आवास के वे प्रमुख केन्द्र रहे होंगे जो आज तटीय क्षेत्र में पानी से डूबे हुए हैं। नील नदी जो आज की तुलना में बहुत छोटी थी, वह दोनों तरफ रेगिस्तान से घिरे संकीर्ण क्षेत्र में पानी की आपूर्ति करती थी। जो लोग वहाँ पर रहते थे, वे शायद संसाधनों के लिए आपस में लड़ते रहे होंगे — हो सकता है कि वे हिंसा भी करते रहे हों। इनकी तीव्रता युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न करती रही हो। लगभग 11,000 वर्ष पूर्व वर्षा की प्रवृत्ति में परिवर्तन होने के कारण नील नदी में पानी का प्रवाह बढ़ा, तथा सहारा के मौसम में नमी आई जिसने इस क्षेत्र में जनसंख्या के विकास को तथा वर्षा ऋतु में मानव आवास को प्रोत्साहन दिया। लगभग 8000 वर्ष पूर्व लोगों ने वहाँ वर्ष-भर रहना आरंभ कर दिया। उन्होंने कुएँ खोदे तथा गोल घरों का निर्माण किया। उन्होंने पत्थर के विशाल लम्बे या गोलाकार स्तम्भ भी स्थापित किए जिनका संबंध नक्षत्र-विज्ञान या धर्म से हो सकता था। हज़ारों वर्ष बाद मौसम में फिर गंभीर परिवर्तन हुए, तथा सहारा का अधिकांश भाग इतना गर्म हो गया कि वहाँ मानव-निवास संभव ही नहीं रहा।

सन् 3100 ई.पू. में मिस्र में एक राष्ट्र राज्य का उदय हो गया था जिसके राजाओं को 'फरोहा' (pharaohs) कहा जाता था। सूडान के नूरी नामक स्थान पर सबसे बड़ा कुश का पिरामिड प्राप्त हुआ

था जिसकी ऊँचाई एक ओर से 95 फुट (30 मीटर) थी। मिस्र के पश्चिम में भी ग्रीस और तुर्की के अवशेष (खंडहर) उत्तर अफ्रीकी तट पर पाए गए। ट्यूनीसिया का लैप्टीमीनस (Leptiminus) स्थल, भूमध्य सागर का एक बंदरगाह था जोकि प्रथम शताब्दी (AD) में रोमन शासन के अधीन आ गया था। बीसवीं शताब्दी में भूसर्वेक्षणकर्त्ताओं ने वहाँ खुदाई के समय तीन रोमन क़ब्रिस्तान प्राप्त किए। एक क़ब्रिस्तान तो ऐसे स्थल पर था जहाँ विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन भी पाए गए। ये बर्तन पाँच शताब्दियों तक भूमध्य सागर क्षेत्र में व्यापार के प्रमुख वस्तु हुआ करते थे।

1.3.2 पश्चिमी अफ्रीका

पश्चिमी अफ्रीका में शामिल हैं- मॉरीटेनिया, माली, नाईजर, नाईजीरिया, चाद, कैमरून, बेनिन, बुर्कीना फासो, टोगो, घाना, आईवरी कोस्ट, लाईबेरिया, सियेरा लियोन, गिनी, गिनी-बिसाऊ, गैम्बिया तथा सेनेगल। इस क्षेत्र का विस्तार उत्तर में सहारा मरुस्थल तक है, परन्तु इसका तटीय क्षेत्र मुख्यतः उष्ण कटिबंधीय (tropical) वर्षा पर निर्भर जंगलों में स्थित है। लगभग 2000 ई.पू. इस प्रदेश में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई, तथा बस्तियों में रह रहे लोगों ने वनों तथा पश्चिमी अफ्रीका के दक्षिणी भाग में स्थित सवाना (Savannah) का विकास किया। घाना एवं आईवरी कोस्ट के लगभग दो दर्जन स्थानों पर ऐसी बड़ी बस्तियों के प्रमाण मिले हैं, जहाँ पर विभिन्न प्रकार के पाषाण-औज़ारों, बकरियों और भेड़ों के अस्थि पंजर, और मिट्टी के बर्तन पाए गए। उसी समय के लोगों ने लगभग धातुओं के विकास पर भी कार्य करना आरंभ कर दिया था। उन्होंने इसकी तकनीक या तो सूडान एवं उत्तरी अफ्रीका से प्राप्त की होगी, या फिर स्वयं इसका विकास किया होगा। नाईजर में की गई खोज से पता लगा है कि वहाँ लोगों ने 2000 ई.पू. ताँबे पर कार्य करना आरंभ कर दिया था। नाईजर में ही लोहे पर कार्य के प्राचीनतम प्रमाण लगभग 1000 ई.पू. के मिले। कुछ शताब्दियों पश्चात् नाईजीरिया, माली, घाना, चाद तथा सेनेगल में भी लोहे का उत्पादन होने लगा था। पश्चिमी अफ्रीका में बड़े शहरी क्षेत्रों का विकास होने के साथ-साथ जटिल सामाजिक संरचना भी विकसित हुई। ऐसा सातवीं शताब्दी से आरंभ होकर उत्तर अफ्रीका के अरबों के साथ सम्पर्क स्थापित होने पर हुआ। लगभग 250 ई.पू. स्थापित नगरों का तीव्र गति से विकास लगभग 500 वर्ष पश्चात् होना आरंभ हुआ। अन्यत्र पश्चिमी अफ्रीका में मिट्टी के टीले पाए गए जिनमें क़ब्रिस्तानों के भवनों, मानव बलिदान तथा शवों के साथ दबी अन्य अनेक वस्तुओं के प्रमाण भी मिले।

कुछ किंवदितियों से, कुछ लिखित दस्तावेजों से और अरब पर्यटकों के वर्णनों से 1000 ई. के पश्चात् के पश्चिम अफ्रीकी राज्यों के विषय में काफी जानकारी प्राप्त हुई। प्राचीन घाना के क्षेत्र में आधुनिक मॉरीटेनिया, माली एवं सेनेगल के अधिकांश प्रदेश भी शामिल थे। अरब विद्वानों के अनुसार तो घाना एक प्रमुख फलता-फूलता राज्य था। एक वर्णन में शाही क़ब्रिस्तान के रीति-रिवाजों की व्याख्या की गई, और यह बताया गया कि प्राचीन घाना की राजधानी आधुनिक मॉरीटेनिया में एक स्थान पर थी। वहीं कॉम्बी सलेह नामक स्थान पर शाही शवों को दफनाने के लिए मिट्टी के टीले हुआ करते थे। यूरोपीय एवं अरबी लेखों में नाईजीरिया में बेनिन के राजतंत्र का वर्णन है जोकि 13वीं से 17वीं शताब्दियों के मध्य अपनी शक्ति और प्रसिद्धि के शिखर पर था। यद्यपि दास-व्यापार अत्यंत गंभीर दोष था, फिर भी अनेक अफ्रीकी नगरों की जनसंख्या 19वीं शताब्दी में 15,000 और 20,000 के बीच थी। खुदाई से पता चला है कि अफ्रीकी व्यापार काफी दूर-दूर तक किया जाता था, इसका संबंध यूरोप के काँच के बर्तनों, शीशे से बनी वस्तुओं के साथ-साथ चीन, भारत तथा अन्य सुदूर पूर्व से होने वाले व्यापार से भी था।

1.3.3 पूर्वी अफ्रीका

पूर्वी अफ्रीका में जिबूती (Djibouti), इरीट्रिया, इथियोपिया, कीनिया, सोमालिया, तन्ज़ानिया तथा युगांडा शामिल हैं। पूर्वी अफ्रीका अचानक 1960 के दशक में प्रसिद्ध हो गया जब लेकी परिवार के सदस्यों ने नाटकीय ढंग से अनेक जीवाश्मों (fossil) अर्थात् पौधों और पशुओं के अवशेषों की खोजें कीं। इन खोजों से अफ्रीका में अति प्राचीन काल में मानव विकास की प्रक्रिया के संबंध में महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। अफ्रीका की उत्पत्ति के विषय में जो सिद्धान्त होमो सेपाइन्स का सहारा लेते हैं वे अपना ध्यान मध्य पाषाण युग के प्रमुख स्थलों जैसे ज़्वाई (Zwai) झील के निकट गादामोता (Gadamotta) पर केन्द्रित करते हैं। यह झील आधुनिक इथियोपिया में है। गादामोता के निवासी औज़ार बनाने के लिए 2 लाख वर्ष पूर्व एक विशेष प्रकार की ज्वालामुखी चट्टान का प्रयोग किया करते थे। तन्ज़ानिया के कुछ स्थानों में लगभग एक लाख वर्ष पुराने औज़ार पाए गए हैं।

घरेलू (पालतू) पशुओं की व्यवस्था पूर्वी अफ्रीका में 4,000 से 5,000 वर्ष पूर्व आरंभ हुई। आज भी इस क्षेत्र में अनेक समूह गडरियों के रूप में कार्य करते हैं। सबसे अधिक प्रचलित पालतू पशुओं में गाय, भैंसें, बकरियाँ तथा भेड़ें थीं। इस क्षेत्र में कृषि के सबसे प्राचीन संकेत इथियोपिया के पर्वतीय क्षेत्रों में ललीबेला गुफा में पाए गए, जिनसे फलियों, ज्वार तथा विशेष प्रकार की मटर की खेती के प्रमाण मिले। इथियोपिया में अन्य स्थानों पर गेहूँ, दालों और अंगूर की खेती के संकेत भी मिले। 2500 से 1700 वर्ष पूर्व विक्टोरिया झील के किनारे पर पूर्वी अफ्रीका में लोहे के प्रयोग के प्रमाण मिले हैं। जिन समुदायों ने लोहे का प्रयोग आरंभ किया उनकी पहचान अब तक नहीं की जा सकी है। लगभग 500 ई. में कृषक पूर्वी अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों में शीत पर्यावरण में विशेषकर तटीय पहाड़ियों पर तथा मैदानी क्षेत्रों में लोहे के औज़ारों का प्रयोग करने लगे थे।

पूर्वी अफ्रीका के तटीय प्रदेशों में, जटिल अफ्रीकी समुदायों के सबसे प्राचीन प्रमाण 800 ई. तक विकसित हिन्द महासागर के निकट शहरी क्षेत्रों में व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना से मिले। कुछ समुदायों ने लकड़ी, चूने और सागर से प्राप्त प्रवाल (coral) से भवन निर्माण का कार्य आरंभ कर दिया था, तथा अपने सिक्के (coins) भी ढालने लगे थे। यहाँ अरब प्रदेश में उदित इस्लाम धर्म के प्रमाण भी पाए गए। ज़ंज़ीबार तथा अन्य तटीय क्षेत्रों के शहरी प्रदेशों के निवासी स्वाहाली (Swahili) तटीय व्यापारियों के पूर्वज माने जाते हैं। यह स्वाहाली व्यापारी अब मोम्बासा (Mombassa) जैसे पूर्वी अफ्रीकी नगरों के निवासी हैं।

समय रेखा

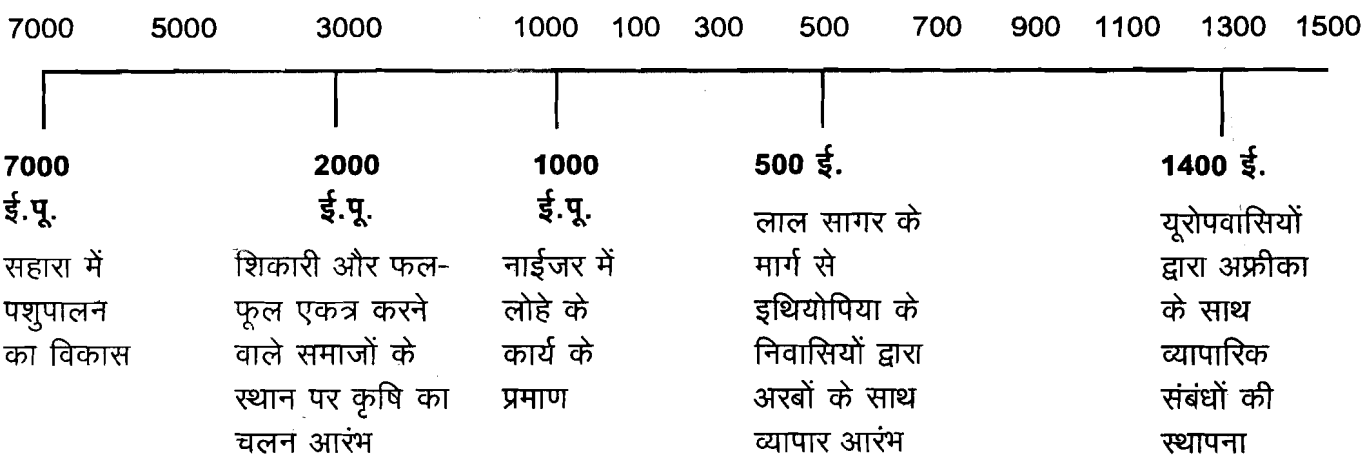

1.3.4 केन्द्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका

अफ्रीका के केन्द्रीय एवं दक्षिणी भाग में जो देश हैं उनमें प्रमुख हैं - अंगोला, बोत्सवाना, बुरूंडी, केन्द्रीय अफ्रीकी गणराज्य, काँगों का लोकतांत्रिक गणराज्य, भूमध्य रेखाई गिनी, गाबन, लेसोथो, मालावी, मोज़ाम्बीक, नामीबिया, काँगो गणतंत्र, रुआंडा, साओ (Sao), टोम एवं प्रिंसींप (Tome and Principe), दक्षिण अफ्रीका, स्वाज़ीलैण्ड, ज़ाम्बिया और ज़िम्बाबवे। अफ्रीका के दक्षिण भाग में कुछ स्थानों पर, जैसे कि स्वाज़ीलैण्ड की सीमावर्ती गुफ़ा (Border Cave) तथा क्लेसिस (Klaisies) नदी के मुहाने पर होमो सेपियंस के अस्थि पिंजर के साथ-साथ "आधुनिक" व्यवहार के प्रमाण भी मिले (जैसे कि पारिवारिक समूह, भोजन की भागीदारी, तथा संसाधनों का नियोजित उपयोग)। यह स्थान हो सकता है एक लाख वर्ष से भी प्राचीन हो। उत्तर-पाषाण युग में केन्द्रीय एवं दक्षिणी अफ्रीका के अधिकांश निवासी खानाबदोश थे। वे मौसम के अनुसार, कभी पर्वतीय क्षेत्रों में तो कभी निचले मैदानी भागों में आते-जाते रहते थे। वे पशुओं को घेर कर उनका शिकार करते थे, विभिन्न प्रकार के कंद-मूल-फल जुटाते थे, तथा सीपी जैसे सागरीय संसाधनों को उपयोग भी करते थे। वे अपने संबंधियों के शवों को सावधानी से दफनाते थे; कभी-कभी क़ब्रों के ऊपर कुछ निशानी भी छोड़ दिया करते थे, तथा शिलाओं पर विभिन्न आकृतियाँ भी बनाते थे। केन्द्रीय और दक्षिणी अफ्रीका में, जहाँ ग्रीष्म ऋतु में पर्याप्त वर्षा होती है, लोगों ने मिश्रित कृषि व्यवस्था अपनाई जिसमें अनाज उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन को भी बढ़ावा मिला। गाँवों को एक-दूसरे के साथ अनाज (खाद्य पदार्थों), मिट्टी के बर्तनों, नमक और लोहे के विनिमय (exchange) के द्वारा सम्बद्ध रखा गया। हो सकता है वे पाषाण युग के शिकारियों की जीवन शैली के सम्पर्क में भी रहे हों, क्योंकि कुछ गाँवों में पत्थर के औज़ार भी पाए गए हैं।

पिछले लगभग 1000 या उससे अधिक वर्षों में केन्द्रीय और दक्षिणी अफ्रीका का चित्र काफी स्पष्ट हुआ है। इस क्षेत्र में पालतू पशुओं को काफी महत्व दिया गया। पर्वतीय क्षेत्रों में कृषकों ने निवास करना आरंभ किया था। वहाँ पत्थर से निर्मित भवनों के खंडहर मिले, जो इस बात की ओर संकेत करते हैं कि वहाँ बड़ी और सम्पन्न जनसंख्या का निवास रहा होगा। बारहवीं शताब्दी तक जटिल राज्यों का उदय होने लगा था। ज़िम्बाबवे एवं बोत्सवाना में लिम्पोपो नदी तट पर मपुंगाब्वे तथा अन्य पर्वतीय नगरों में इन राज्यों के केन्द्र थे। इन समाजों को विभिन्न आर्थिक एवं सामाजिक वर्गों में विभाजित किया गया था। उनके शासक स्थानीय अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के साथ-साथ अन्य देशों के साथ संबंधों का भी संचालन करते हैं। यह संबंध हिन्द महासागर के अरब तटों के व्यापारियों के साथ स्थापित किए गए जहाँ पर अफ्रीकी वस्तुओं (जैसे स्वर्ण, हाथी दांत तथा पशुओं की खालों) का अन्य देशों की वस्तुओं (जैसे कि शीशे के मनकों (beads) तथा सूती कपड़ों) के साथ विनियम (exchange) किया जाता था। जिन अरब व्यापारियों ने दक्षिणी अफ्रीका को हिन्द महासागर से जोड़ा उन्होंने सागर तट पर अपनी बस्तियाँ स्थापित की थीं। यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने (पुर्तगालियों से आरंभ करके) सोलहवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में महाद्वीप के आंतरिक भाग में प्रवेश करना आरंभ किया।

1.4 प्रारंभिक अफ्रीकी राजतंत्र (राजघराने)

प्रथम लगभग दस शताब्दियों (first millennium A.D.) में अफ्रीका में अनेक राजतन्त्र स्थापित हुए। जो थोड़ा-बहुत प्रमाण उपलब्ध है, ये राज्य आरंभ में छोटी-छोटी जागीरों से अधिक कुछ नहीं थे। इनके शासक वंशगत आधार पर सामान्य निवासियों (प्रजा) की भलाई के लिए वचनबद्ध होते थे। उनकी शक्तियाँ धार्मिक क्रियाएँ मात्र थीं, परन्तु धीरे-धीरे वे राजनीतिक और सामाजिक विकास के प्रभाव में

आकर धर्मनिरपेक्ष शक्तियों में परिवर्तित हो गईं। पश्चिम एशिया के अयूबिड मिस्र (Ayyubid Egypt) के सौदागरों ने तेरहवीं शताब्दी में ममलुक राजवंश (Mamluk dynasty) की स्थापना की, जिसने सोलहवीं शताब्दी के आरंभ तक मिस्र पर शासन किया। यह शासन प्रायः सफल रहा।

मध्य युग के विशाल साम्राज्यों में घाना सर्वप्रथम था, जिसकी स्थापना पश्चिमी सूडान में आठवीं शताब्दी से पूर्व सोनिके मुखियाओं के द्वारा की गई। यह राज्य 11वीं शताब्दी में अपनी सफलता के शिखर पर पहुँच गया था।

पश्चिमी और केन्द्रीय सूडान में उदित माली का अल्प-कालीन साम्राज्य भी पश्चिमी देशों के साथ व्यापार में एक प्रभावशाली भागीदारी रहा था। ऐसा माना जाता है कि इसके मंदिंका (Mandinka) राजाओं ने 11वीं शताब्दी में इस्लाम धर्म को अपना लिया था। वे अनेक धार्मिक तीर्थ यात्राओं पर भी गए। परन्तु, माली में इंस्लाम धर्म वास्तव में सुप्रसिद्ध शासक मन्सा कंकान मूसा (1312-1337) के शासन काल में विकसित हुआ। अधिकांश पश्चिमी सूडान, केन्द्रीय सूडान के पश्चिमी भाग तथा दक्षिणी सहारा के अधिकांश भाग को उसने अपने शासन (अधिकार-क्षेत्र) में शामिल कर लिया था। वह 1324 में एक तीर्थ यात्रा पर गया जिसे मिस्र में लम्बे समय तक उसके वैभव के लिए याद रखा गया। वापस आकर उसने इस्लाम पर आधारित प्रशासन की अपनी सरकारी संरचना और अपने दरबार में लागू किया।

गिनी शब्द की उत्पत्ति बर्बर से मानी जाती है। इसमें 1400 ई. से पहले ही अनेक राजघरानों को उदय होते हुए देखा। इनमें से प्रमुख थे - यूरोबा (पश्चिमी नाईजीरिया) का राजघराना, मध्य-पश्चिमी नाइजीरिया का इदो (Edo) राजतन्त्र, अकान राजघराना (केन्द्रीय घाना) तथा सेनेगल का वोलोफ (Wolof) राजतन्त्र। ऐसा प्रतीत होता है कि यूरोबा के राजतन्त्र का जन्म, स्थानीय (मूल) निवासियों और केन्द्रीय सूडान के सांस्कृतिक समन्वय (संश्लेषण) का परिणाम था। ऐसा 1000 ई. से काफी पहले हुआ। उन्होंने धनी सांस्कृतिक जीवन का, हस्तकला उत्पादन में विशेष कौशल का, विशेष विशाल शहरी बस्तियों का, तथा जटिल राजनीतिक व्यवस्था का विकास किया। धीरे-धीरे यूरोबा के राजघराने धार्मिक और जातीय एकता के आधार पर निकट आते गए और वे ओयो साम्राज्य (1650-1810) में विलीन हो गए।

अन्य अनेक राजघरानों की उत्पत्ति भी रीति-रिवाजों, और राजनीतिक एवं सैनिक नेतृत्व के आधार पर पूर्वी, केन्द्रीय और दक्षिणी अफ्रीका में हुई। इनमें से कुछ पर लम्बी दूरी के व्यापार का प्रभाव पड़ा। ये थे - शोना और केन्द्रीय-दक्षिणी पठार के उसके पड़ोसी राज्य, तथा 16वीं शताब्दी के पश्चात लूबा, लुंडा, तथा उनके काँगो, अँगोला प्रदेश के अन्य पड़ोसी राज्य। अन्य की मुख्य चिंता, कमान अपने हाथों में रखने की थी; या फिर चरागाहों और खेतों का विभाजन करने की। उदाहरण के लिए इनमें दक्षिणी बांटू के राज्य जोकि अब ट्रांसवाल, नैटाल, दक्षिणी अफ्रीका के पूर्वी केप प्रांत; तथा पड़ोस के कुछ अन्य राज्य जैसे कि स्वाज़ी, वेंडा, ज़्होंसा, एवं नगूनी (जहाँ उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में ज़ूलू साम्राज्य का उदय हुआ) आदि शामिल थे। कुछ ऐसे राजतन्त्र भी थे जिनमें जातीय भेदभाव के आधार पर पशुपालक कृषकों पर शासन करते थे। चाहे ये राज्य वर्ग और जाति पर आधारित थे, फिर भी इन्होंने यूरोपीय तथा एशियाई देशों की भांति पदसोपानीय व्यवस्था नहीं अपनाई। शायद इसलिए कि वहाँ भूमि का निजी स्वामित्व नहीं था, केवल फलों और पशुओं पर निजी स्वामित्व (private ownership) था।

1.5 इस्लाम का विस्तार

इस्लाम धर्म का उदय मक्का (Mecca) नामक अरब नगर में लगभग 610 ई. में पैग़म्बर मोहम्मद के समय में हुआ था। सन् 630 में पैग़म्बर की मृत्यु के पश्चात् अरबी व्यापारी, सैनिक तथा प्रवासी उनकी शिक्षाओं को अफ्रीका में ले गए। धर्म-परिवर्तन तथा आक्रमण के द्वारा उत्तरी अफ्रीका में पूर्व में हॉर्न ऑफ अफ्रीका में, तथा पश्चिमी अफ्रीका में सहारा मरुस्थल में भी इस्लाम का विस्तार हुआ। इन क्षेत्रों के राजनीतिक एवं सामाजिक विकास पर इस्लाम का काफी प्रभाव पड़ा। आज भी अफ्रीका में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

इस्लाम का प्रादुर्भाव अफ्रीका में सातवीं और आठवीं शताब्दियों में हुआ। इस धर्म को मिस्र तथा उत्तरी अफ्रीका में आक्रमणकारी सेनाओं द्वारा लाया गया। पूर्वी अफ्रीका तट पर व्यापारियों ने इस धर्म का प्रसार किया। पश्चिमी अफ्रीका में आठवीं शताब्दी तक इस्लाम का प्रसार नहीं हुआ, परन्तु पूर्वी अफ्रीका की अपेक्षा पश्चिमी भाग में इसके प्रसार की गति मंद रही।

1.5.1 मिस्र, सूडान और इथियोपिया

सन् 639 ई. में लगभग 4,000 सैनिकों ने मिस्र पर आक्रमण किया। मिस्र उस समय बिज़ेन्टाईन साम्राज्य के नियंत्रण में था। चाहे संख्या में मुस्लिम सैनिक कम थे, फिर भी वे बिज़ेन्टाईन शासकों को खदेड़ देने में सफल रहे तथा उन्होंने अपने शासक, अर्थात् अमीर को सत्तारूढ़ किया। इसके शीघ्र बाद, अरबों ने नील नदी के साथ-साथ दक्षिण की ओर अभियान आरंभ किया तथा आधुनिक उत्तरी सूडान में स्थित नूबिया के ईसाई राजतन्त्र पर आक्रमण किया। परन्तु नूबिया ने आक्रामकों को आगे बढ़ने से रोक दिया; वे पीछे मुड़ गए, तथा 651 में मिस्र के अमीर (Emir) ने नूबिया के साथ एक शांति संधि पर हस्ताक्षर किए।

तेरहवीं शताब्दी में जब नूबिया के राजतन्त्र का पतन आरंभ होने पर वहाँ इस्लाम का प्रभाव बढ़ना आरंभ हुआ। मिस्र के अरब मुसलमान वहाँ आकर बसने लगे, तथा स्थानीय लोगों के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। एक सौ वर्षों में वहाँ ईसाई धर्म का स्थान इस्लाम ने ले लिया। फिर भी दक्षिणी नूबिया में इस्लाम की प्रगति धीमी रही। वहाँ आज भी ईसाई धर्म प्रमुख है। इसके अतिरिक्त, आधुनिक सूडान में उत्तर के मुस्लिम प्रभाव वाले क्षेत्र तथा दक्षिण के ईसाई प्रदेश में संघर्ष अब भी चलता रहता है। अफ्रीका के अन्य भागों की अपेक्षा इथियोपिया का अरब देशों के साथ संपर्क, इस्लाम के उदय से पूर्व ही हो गया था। अतः यातनाओं से बचने के लिए मोहम्मद के अनुयायियों ने 615 और 616 ई. में अरब से पलायन किया। तब उन्हें इथियोपिया के ईसाई राज्य में सुरक्षित शरण मिली। मुस्लिम व्यापारियों ने लाल सागर के तट के साथ वहाँ पर अपनी बस्तियाँ स्थापित कीं जहाँ से आंतरिक भागों की ओर व्यापार का मार्ग जाता था। इन मुस्लिम बस्तियों का धीरे-धीरे छोटे-छोटे राज्यों के रूप में विकास हुआ जिन पर सुल्तानों ने राज्य स्थापित किए। पन्द्रहवीं शताब्दी में एक मुसलमान नेता अहमद ग्रान ने ईसाई इथियोपिया के विरुद्ध युद्ध में विजय प्राप्त करके इन सभी सल्तनतों को जोड़ दिया। परन्तु, 1543 में मुसलमानों की पराजय के साथ ही इथियोपिया में इस्लाम का विस्तार रुक गया।

इथियोपिया की तरह, सोमालिया में भी इस्लाम के उदय से पूर्व, अरब व्यापारियों का निवास था। दसवीं शताब्दी तक सागर तट पर अनेक स्थानों पर मुस्लिम बस्तियाँ स्थापित हो गई थीं। इनमें मोगादीशू भी शामिल था। बारहवीं शताब्दी में मुसलमानों का एक और समूह सोमालिया में आकर

बसने लगा। जब सोमाली लोगों ने दक्षिण पर आक्रमण किए तब वे इस्लाम को अपने साथ उत्तर-पूर्वी कीनिया तक ले आए। ख़ानाबदोश सोमाली चरवाहों ने इस्लाम का आंतरिक ग्रामीण प्रदेशों तक प्रसार कर दिया। वहाँ इसका विकास अफ्रीका के पारम्परिक धर्म और रीति-रिवाज के साथ-साथ हुआ। बीसवीं शताब्दी में सोमालिया में इस्लाम के सूफ़ी सम्प्रदाय का विकास हो गया। एक सूफ़ी नेता मोहम्मद अब्दुल्ला हसन, सोमालिया में यूरोपीय साम्राज्यवाद के प्रमुख विरोधी के रूप में उभरा।

सन् 740 में मुसलमानों का एक अन्य समूह दक्षिणी मैसोपोटामिया (आधुनिक इराक) से आकर अफ्रीका के पूर्वी तट पर बस गया। इनमें से अनेक टुकड़ियाँ सागर तट के निकट द्वीपों में अरब नगरों में जाकर बस गईं। यह द्वीप तथा तट पर मुख्य भूमि पर स्थित नगर मुस्लिम प्रभाव के केन्द्र बन गए। समय बीतने पर मुसलमानों ने स्वाहाली भाषा के साथ-साथ अनेक स्थानीय रीति-रिवाज भी अपना लिए। नगरों और कस्बों में एक नई पूर्वी अफ्रीकी इस्लामी सभ्यता का विकास हुआ। यह विकास दक्षिणी सोमालिया से उत्तरी मोज़ाम्बीक तक हुआ।

पूर्वी अफ्रीका के आन्तरिक भागों में इस्लाम का प्रसार अठारहवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दियों में आरंभ हुआ। उस समय अरबी राज्य ओमान के मुसलमानों का तटीय क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित हो गया था। ओमानी व्यापारियों ने ज़ंज़ीबार में अपना व्यापारिक साम्राज्य स्थापित कर लिया था। वहाँ से उन्होंने अंदर की ओर जाने वाले अनेक व्यापारी मार्गों की स्थापना की, तथा कीनिया, युगांडा एवं तन्ज़ानिया में अपनी बस्तियाँ स्थापित कीं, और काफ़िलों के मार्ग भी बना लिए।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश तथा जर्मन औपनिवेशिक सेनाओं ने इन प्रदेशों को अपने अधीन कर लिया था। औपनिवेशिक अधिकारियों ने मुसलमानों को सिविल सेवकों, सैनिकों तथा कर वसूल करने वालों के रूप में नौकरियों पर नियुक्त किया। इस प्रकार औपनिवेशिक प्रशासन में इस्लामी सभ्यता का प्रवेश हुआ। इस स्थिति में मुसलमानों का प्रभाव शहरी क्षेत्रों तक सीमित रहा।

1.5.2 पश्चिमी अफ्रीका

पश्चिमी अफ्रीका के साथ मुसलमानों के सम्पर्क के सबसे पहले प्रमाण लगभग 9वीं शताब्दी में कानेम राज्य में पाए गए। यह अब चाद (Chad) कहलाता है। इस्लाम 1085 में कानेम का राज्य धर्म बना। ऐसा ही लगभग उसी समय और अधिक पश्चिम में भी हुआ, जैसे कि माली में गाओ (Gao) राज्य में। यद्यपि पश्चिमी अफ्रीकी साम्राज्य घाना में मुसलमानों को कभी राजसिंहासन पर बैठने का अवसर तो नहीं मिला, फिर भी उन्होंने मन्त्रियों इत्यादि के पद अवश्य संभाले। ग्यारहवीं शताब्दी के अंत में उत्तरी अफ्रीका और स्पेन के मुसलमानों ने घाना के साम्राज्य का पतन करवा दिया।

उस समय मुस्लिम व्यापारी क़ाफ़िलों के उन मार्गों पर भी नियंत्रण कर सके थे, जोकि सहारा होते हुए उत्तरी और पश्चिमी अफ्रीका की ओर जाते थे। इन क़ाफ़िलों में स्वर्ण, चाँदी, दास (slaves), कपड़े और घोड़े सैकड़ों मील तक ले जाए जाते थे। व्यापार को नियंत्रित करने तथा कर वसूली में वृद्धि के उद्देश्य से मुस्लिम शासकों ने इन मार्गों में आने वाले नगरों और ग्रामों को जीत लिया। ये नगर आगे चलकर माली, सोंघाई तथा कानेम के विशाल राज्यों के रूप में उभरे थे।

इनमें से अनेक राज्यों (kingdoms) में इस्लाम और मूल धर्मों का सह-अस्तित्व रहा। यद्यपि इस व्यवस्था से शांति स्थापना में सहायता मिली, फिर भी सूफ़ी नेतागण अप्रसन्न हुए क्योंकि वे चाहते थे

कि इस्लाम के सिद्धान्तों का अधिक कठोरता से पालन किया जाए। अठारहवीं शताब्दी के आरंभ से, पश्चिमी अफ्रीका में सूफ़ी नेताओं ने इस्लामी देशों के विरुद्ध जेहाद (या धर्म युद्ध) छेड़ दिया क्योंकि उन्होंने पारम्परिक (मूल) धर्मों को पूरी तरह त्यागा नहीं था। यह जेहादी आन्दोलन लगभग 200 वर्षों तक चला, और अंत में अनेक कट्टर इस्लामी राज्यों की स्थापना हुई।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में ब्रिटिश और फ्रांसीसी सेनाओं ने जेहादियों को पराजित कर दिया। उसके पश्चात्, पूर्वी अफ्रीका की तरह यहाँ भी शिक्षित मुसलमानों ने सामान्यतया औपनिवेशिक सरकारों के साथ सहयोग किया। इसके कारण अनेक यूरोपीय नेताओं ने, अन्य अफ्रीकियों की तुलना में, मुसलमानों को श्रेष्ठ माना। परन्तु जब मुस्लिम नेताओं ने औपनिवेशिक शासन का विरोध किया, तब यूरोपीय लोगों ने इस्लाम को दक़ियानूसी, कट्टरपंथी तथा ईसाई धर्म-विरोधी कहना आरंभ कर दिया।

1.5.3 अफ्रीका पर इस्लाम का प्रभाव

एक राजनीतिक और सैनिक शक्ति के रूप में इस्लाम ने अफ्रीका के विशाल प्रदेशों में एकता स्थापित की। परन्तु जैसे-जैसे इस महाद्वीप में इस्लाम की जड़ें मजबूत हुईं वैसे-वैसे मूल कानूनी, धार्मिक और सामाजिक प्रथाओं के साथ उसके संघर्ष हुए।

अफ्रीकी समाज में इस्लामी कानून के लागू होने से व्यक्तियों के कानूनी संबंधों में परिवर्तन हुए। इस्लामी कानून अर्थात् शारी एक लिखित व्यवस्था है। अफ्रीका में शारी तथा स्थानीय कानूनी परम्पराओं के समन्वय से एक नई मिली-जुली व्यवस्था का जन्म हुआ। परन्तु जहाँ शारी के व्याख्याकारों ने अपने कानून की कड़ी व्यवस्था की वहाँ शारी ने सामाजिक संबंधों के कुछ मूल आधारों में परिवर्तन कर दिया।

पारम्परिक अफ्रीकी समाजों में नातेदारी (kinship) संबंध व्यक्तियों की पहचान, उनके अधिकारों एंवं उत्तरदायित्व तथा समाज की भूमिका मूल आधार माने जाते हैं। इस्लामी कानूनों ने इनमें से अनेक संबंधों को नया रूप देकर पारम्परिक प्रथाओं में संघर्ष उत्पन्न कर दिया। नई इस्लामी व्यवस्था ने समाज में महिलाओं की भूमिका को सीमित कर दिया है। सामान्यतया इस व्यवस्था में पुरुषों को सम्पत्ति पर अधिक अधिकार प्राप्त हुए। यही नहीं, महिलाओं के गर्भाधान तथा बच्चों के जन्म से संबंधित अधिकारों पर भी पुरुषों की वरीयता स्थापित हुई है। अनेक प्राचीन पारम्परिक समाजों में महिलाओं को पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त थी।

समय रेखा

600 800 1000 1200 1400 1600 1800 2000

सातवीं शताब्दी
अरब अपने साथ अफ्रीका में इस्लामी धर्म और संस्कृति लाए।

ग्यारहवीं शताब्दी
इथियोपिया, सोमालिया, तथा कीनिया में मुसलमानों ने व्यापारिक समुदाय स्थापित किए।

बारहवीं शताब्दी
इस्लाम पश्चिम अफ्रीकी राजतन्त्रों का प्रमुख धर्म बना।

1543
इथियोपिया में मुसलमानों को ईसाइयों ने पराजित किया।

अठारहवीं शताब्दी
मुसलमानों ने अन्य धर्मावलम्बियों के विरुद्ध धर्म युद्ध (जेहाद) छेड़ा।

उन्नीसवीं शताब्दी
यूरोपवासियों ने मुस्लिम प्रदेशों में अपने उपनिवेश स्थापित किए।

आधुनिक वर्षों में समाज सुधारकों ने इस्लामी कानूनों में कुछ परिवर्तन करके उन्हें परम्परा के साथ जोड़ने का प्रयास किया है।

1.6 यूरोपीय प्रभाव तथा दास व्यापार

अफ्रीका सहित विश्व के अनेक भागों में बहुत लम्बे समय से दास प्रथा एक प्रचलित परम्परा रही थी। जब यूरोपीय व्यापारी एवं औपनिवेशिक शासक अफ्रीका में आए तब दास-व्यापार एक वाणिज्य बन गया, जिसमें दास बनाए गए मानवों को सामान या सम्पत्ति की भांति खरीदा-बेचा जाने लगा। लाखों अफ्रीकियों को दास-व्यापार में अत्याचार एवं अमानवीय व्यवहार सहने पड़े। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में दास प्रथा को अवैध घोषित कर दिया गया था, फिर भी ग़ुलामों के व्यापारियों के चंगुल से इस प्रथा को मुक्त करवाने में कई दशक लग गए। सबसे अधिक व्यक्तियों को पश्चिमी और केन्द्रीय अफ्रीका से दास के रूप में ले जाकर अटलांटिक महासागर के पार यूरोप के अमरीकी उपनिवेशों में बेचा गया। अटलांटिक पार ले जाने की प्रक्रिया से सैकड़ों वर्ष पूर्व से अफ्रीका के अन्य भागों में दास प्रथा प्रचलित थी। दास-व्यापार के दीर्घगामी परिणाम हुए - जैसे कि, अन्य महाद्वीपों में अफ्रीकी लोगों का बसाया जाना, अनेक कुशल युवाओं से वंचित अफ्रीकी समाज की शक्तिहीनता, तथा अफ्रीकी राज्यों के मध्य युद्ध, क्योंकि उनमें से अनेक विदेशों में दास-व्यापार के लिए लोगों को पकड़ लिया करते थे।

1.6.1 उत्तरी अफ्रीका

उत्तरी अफ्रीका का अधिकांश दास-व्यापार ऊँटों के क़ाफ़िलों के द्वारा होता था जिनका संयोजन अरबी-भाषी आततायियों के द्वारा सहारा तथा उत्तरी अफ्रीका में किया जाता था। इनमें से कुछ क़ाफ़िले पश्चिमी सहारा से होकर गुज़रे। इनमें ग़ुलाम बनाए गए वे अफ्रीकी थे जो प्रायः उन प्रदेशों से लाए गए थे जो आधुनिक माली, नाईजर, नाईजीरिया तथा घाना हैं; तथा इन्हें उत्तरी अफ्रीका की अरब बस्तियों की ओर ले जाया गया। कुछ अन्य क़ाफ़िले पूर्व में आधुनिक सूडान में डार्फर से आरंभ हुआ। उनमें दक्षिणी नील नदी घाटी में तथा इथियोपिया तथा सूडान में पकड़ लिए गए ग़ुलामों को मिस्र की ओर उस मार्ग से ले जाया गया जिसे "चालीस दिन का मार्ग" (Forty Day Road) कहते थे। इतिहासकारों का अनुमान है कि लगभग 40 लाख बंधकों (ग़ुलामों) को सहारा के रास्ते ले जाया गया; तथा अन्य बीस लाख लाल सागर के मार्ग से ले जाए गए। ऐसा 8वीं तथा 19वीं शताब्दी के मध्य हुआ। सहारा एवं लाल सागर से लाए गए पीड़ित ग़ुलामों को उत्तरी अफ्रीका, अरब, तथा फ़ारस की खाड़ी के निकटवर्ती प्रदेशों में रखा गया। अन्य ग़ुलाम सहारा क्षेत्र, उत्तरी सूडान अथवा इथियोपिया में ही रहे। इन ग़ुलामों में अनेक महिलाएँ भी थीं जिन्हें या तो घरेलू नौकरों की तरह रखा गया, या फिर रखैलों के रूप में। पकड़े गए पुरुषों को कृषि, खानों, जहाज़रानी, मछली पकड़ने तथा ऐसे ही अन्य शारीरिक परिश्रम के कार्यों में लगाया गया। इसके अतिरिक्त, मिस्र के कुछ शासकों तथा अन्यत्र उत्तरी अफ्रीका में श्याम (काले) वर्ण के दासों को सैनिकों के रूप में भी काम में लाया गया।

1.6.2 पश्चिमी अफ्रीका

पन्द्रहवीं शताब्दी में आरंभ करके यूरोप की औपनिवेशिक शक्तियों ने पहले अटलांटिक महासागर के द्वीपों में, फिर अमेरिका में, और अंत में अफ्रीका में अपने उपनिवेश स्थापित किए। यूरोपीय व्यापारी पश्चिमी अफ्रीका से परिचित थे जहाँ उन्हें सोना, ताँबा, काली मिर्च मिलते थे और जहाँ से उन्होंने कुछ

काले ग़ुलाम भी पकड़े थे। अमरीकी महाद्वीपों के उपनिवेशीकरण के पश्चात् काले ग़ुलामों की जैसे बाढ़-सी आ गई। तब ऐसे दास-व्यापार का विकास हुआ जिसमें यूरोपीय एवं अफ्रीकी दोनों लोगों की भागीदारी थी। अफ्रीकी ग़ुलामों के व्यापारियों ने मुनाफा कमाने का एक जाल बिछा दिया जिसे त्रिकोणीय व्यापार का नाम दिया गया। इस त्रिकोण के पहले चरण में, जहाज़ों में भरकर यूरोप में उत्पादित वस्तुएँ (जैसे कपड़ा और सस्ती बंदूकें) अफ्रीका लाई गईं, जहाँ उनके बदले ग़ुलामों को ले जाया गया। दूसरे, अर्थात् मध्य चरण में, ग़ुलाम बनाए गए अफ्रीकियों को अमरीकी महाद्वीपों में ले जाया गया। व्यापार के तीसरे चरण में, चीनी, रम, तम्बाकू तथा अन्य कृषि-उत्पादों को (अमेरिका से) यूरोप ले जाया गया। मध्य चरण पकड़े गए अफ्रीकियों के लिए डरावना होता था। अटलांटिक पार का ग़ुलाम व्यापार 1440 के दशक से 1860 के दशक तक चला, और यह 1700 से 1850 ई. तक अपने शिखर पर था। कम से कम 1 करोड़ 30 लाख लोगों को अफ्रीका से अमरीकी प्रदेशों में ले जाया गया। इन गुलामों में से अधिकतर 15 से 30 वर्ष की आयु वर्ग के थे। लगभग दो-तिहाई बंधक पुरुष थे। अमरीकी महाद्वीपों में खेतों में काम करने वाले पुरुषों की माँग थी। इन 1 करोड़ 30 लाख में से अधिकांश ग़ुलाम अफ्रीका के उत्तरी तट - सेनेगल और कैमरून से ले जाए गए। अनेक बंधकों को घाना में वोल्टा नदी और नाईजीरिया में नाईजर नदी क्षेत्र से भी लिया गया। इस प्रदेश का नाम यूरोपीय लोगों ने ग़ुलाम तट (slave coast) रख दिया था।

पुर्तगालियों ने 15वीं शताब्दी में केन्द्रीय अफ्रीका से ग़ुलामों का निर्यात करना आरंभ किया तथा पश्चिमी तट से हटकर साओ टोम (Sao Tome) नामक स्थान पर गन्ने की खेती करना आरंभ किया। सन् 1560 के दशक में पुर्तगाली इस द्वीप (साओ टोम) में 30,000 दास (ग़ुलाम) ले आए थे। इनमें से अधिकांश अंगोला से थे। अगली एक शताब्दी में उन्होंने बड़ा ग़ुलाम-व्यापार स्थापित कर लिया। इसका मूल प्राप्ति स्थल काँगो नदी के दक्षिण में था जहाँ युवा अफ्रीकी योद्धाओं ने छापे मार कर ग़ुलामों को पकड़ना आरंभ किया। सत्रहवीं शताब्दी में, साओ टोम के स्थान पर ब्राजील पुर्तगाली ग़ुलामों का प्रमुख बाजार बन गया। ब्राजील के विशाल गन्ने के खेतों के लिए अफ्रीकी दासों की माँग बढ़ती जाती थी। यह माँग अठारहवीं शताब्दी में ब्राजील में सोने और हीरों की खोज के बाद और भी बढ़ गई। सत्रहवीं शताब्दी के अंत में अंग्रेज़ों, फ्रांसीसियों और डच दास-व्यापारियों ने केन्द्रीय अफ्रीका के अटलांटिक तट से भी यह व्यापार आरंभ कर दिया। उन्होंने पकड़े गए ग़ुलामों को जहाज़ों में भर कर वेस्ट इंडीज़ की ओर भेजना आरंभ किया।

महत्वपूर्ण दास-व्यापार के आरंभिक प्रमाण सातवीं शताब्दी में इस्लाम के उदय के साथ हुए मिले हैं। अब्बासिद ख़िलाफ़त (Abbasid Caliphate) जिसकी स्थापना उस स्थान पर हुई जहाँ आधुनिक इराक और ईरान हैं, में अफ्रीका से ग़ुलामों को सैनिकों, खेतिहर मज़दूरों तथा घर के नौकरों के रूप में कार्य करने के लिए लाया गया। मुस्लिम व्यापारियों ने उन्हें और अधिक पूर्व की ओर इंडोनेशिया तथा चीन भेजा। सत्रहवीं शताब्दी के अंत से आरंभ होकर, अरब तट पर ओमान राज्य ने अपने खजूर के उत्पादन को बढ़ाया, तथा कीनिया के तट पर पौधे लगाने आरंभ किए। अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में फ्रांस ने हिन्द महासागर स्थित मॉरीशस एवं रीयूनियन द्वीपों से कैरीबियन प्रकार की गन्ने की खेती आरंभ की। इससे अफ्रीकी ग़ुलामों की माँग में और भी वृद्धि हुई। इस माँग की पूर्ति के लिए पूर्वी अफ्रीका में ग़ुलामों के नए बाजारों का उदय हुआ। इनमें सबसे बड़े बाजार तट के दक्षिणी भाग में थे। परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी तक अफ्रीका के पूर्वी तट पर लगभग सभी बंदरगाह थोड़ा-बहुत ग़ुलाम-व्यापार कर रहे थे। पूर्वी अफ्रीका से अधिकांश ग़ुलाम बनाए गए लोग मोज़ाम्बीक, तन्ज़ानिया, मलावी झील के निकटवर्ती प्रदेश, पूर्वी कांगों और मैडागास्कर से पकड़े जाते थे। तटीय प्रदेशों से गुज़रने वाले अधिकांश ग़ुलामों को विदेशों में, या निकटवर्ती द्वीपों में भेजा जाता था। अन्य ग़ुलाम अरबों के नियंत्रण

बाले उन खेतों में भेजे गए जोकि ज़ंज़ीबार, कीनिया तथा दक्षिणी सोमालिया में थे। अठारहवीं शताब्दी में ब्राजील के ग़ुलाम व्यापारी पूर्वी अफ्रीका के ग़ुलाम बाजारों में आए, और ब्राजील की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए खेतिहर ग़ुलाम लेकर गए। मैडागास्कर के अफ्रीकी शासक, तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे डच लोग भी पूर्वी अफ्रीका से ग़ुलामों का आयात करते थे। इस क्षेत्र में ग़ुलामों का व्यापार 1770 से 1870 तक अपनी चरम सीमा पर था। उनका निर्यात कभी-कभी तो एक वर्ष में 30,000 ग़ुलामों तक किया गया।

1.6.3 दास व्यापार का अंत

अठारहवीं शताब्दी के अंत में दास-प्रथा के उन्मूलन की प्रक्रिया को यूरोपीय देशों का समर्थन मिलने लगा था। इसका मुख्य कारण यह था कि नैतिक आधार पर दास-प्रथा का कड़ा विरोध हो रहा था। अंततः दास प्रथा का उन्मूलन कुछ तो धार्मिक और नैतिक आधार पर, और कुछ आर्थिक आधार पर हुआ। चार सौ सालों की लम्बी अवधि तक चले अमानवीय दास-व्यापार ने अफ्रीकी जनमानस पर गहरी छाप छोड़ी। पश्चिमी अफ्रीका से ले जाए गए ग़ुलामों ओलाउदाह इक्वानो (Olaudah Equiano) तथा ओताबा कुगानो (Ottabah Cugoano), जो मुक्त होकर इंगलैंड में निवास कर रहे थे, ने दास-प्रथा की यातनाओं के विषय में बोला और लिखा, तथा उसके विरुद्ध संघर्ष भी किया। कुछ अन्य अफ्रीकियों ने ऐसी ही भूमिका फ्रांस तथा अमेरिका में भी निभाई। सन् 1805 में डेनमार्क ने पहल करते हुए अपने नागरिकों को दास-व्यापार से रोकने के लिए इस प्रथा को ग़ैर-कानूनी घोषित कर दिया। दो वर्ष पश्चात् इंगलैंड ने भी ऐसा ही किया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1808 में दास-व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया। फिर 1814 में नीदरलैंड ने तथा 1817 में फ्रांस ने भी इसी प्रकार के प्रतिबंध लगाए। ग्रेट इंगलैंड ने दास-प्रथा का 1834 में ही उन्मूलन कर दिया तथा सभी ग़ुलामों को मुक्त करवा दिया। जब 1888 में ब्राजील ने दास-प्रथा का अंत किया तब तक इस प्रथा को समस्त पाश्चात्य विश्व ने अवैध घोषित कर दिया था। इस बीच तुर्की के साम्राज्य (Ottoman Empire) में 1830 से लेकर 1880 के दशक तक की अवधि को सुधारों का युग कहा जा सकता है, क्योंकि उच्च और शिक्षित वर्ग के लोगों ने दास प्रथा की नैतिक आधार पर निन्दा करनी आरंभ कर दी थी। इस अवधि में तुर्की के शासकों पर इंगलैंड एवं अन्य यूरोपीय देशों ने दास-प्रथा को समाप्त करने के लिए दबाव बढ़ा दिया। इंगलैंड ने तो उन मार्गों को ही बंद कर दिया जो तुर्की के साम्राज्य को ग़ुलाम ले जाने के लिए प्रयोग में ले जाते थे। फलस्वरूप तुर्की ने 1847 से 1908 के बीच अनेक कानून बनाकर अफ्रीकी और श्वेत दोनों प्रकार के दासों में व्यापार को अवैध घोषित करके दास प्रथा का उन्मूलन कर दिया।

अफ्रीका के ग़ुलामों के व्यापार के कारण इतिहास में मानव का सबसे बड़ा बाध्य-आवागमन हुआ। इसके फलस्वरूप कैरीबियन के द्वीपों, तथा उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के देशों में अश्वेत (काली) जनता के निवास का आधार स्थापित हुआ। साथ ही इसने अफ्रीका में सामाजिक और राजनीतिक जीवन को अस्त-व्यस्त किया, तथा इस महाद्वीप के द्वार यूरोपीय उपनिवेशवाद के लिए खोल दिए। दास-व्यापार ने शक्तिशाली राज्यों को कम शक्तिशाली राज्यों पर ग़ुलाम प्राप्त करने के लिए छापे मारने के लिए प्रोत्साहित किया। परिणाम यह हुआ कि अफ्रीका के अनेक समाज संगठित दास-युद्धों तथा सामान्य गुंडागर्दी में विभाजित हो गए। दास-व्यापार में सफल समाजों ने नए राज्यों की स्थापना की जिनमें सैन्य समूहों का वर्चस्व था। वे अपने पड़ोसियों से निरंतर लड़ते रहते थे।

यद्यपि दास-प्रथा उन्मूलन का आंदोलन इस विश्वास के साथ हुआ था कि यह प्रथा नैतिक रूप से गलत थी, फिर भी इस प्रक्रिया से यूरोप के देशों को अफ्रीका पर आक्रमण करने का बहाना मिल गया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में अधिकांश अफ्रीकी प्रदेशों पर यूरोपीय देशों का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया। ईसाई धर्म के प्रसार के साथ यूरोपीय उपनिवेशों में दास-प्रथा कमजोर पड़ने लगी थी। परन्तु यह प्रथा अचानक समाप्त नहीं हो गई। कुछ क्षेत्रों में धीरे-धीरे सुधार हुए, तथा दास-प्रथा एवं बंधक प्रथा धीरे-धीरे नष्ट होने लगीं। दूसरी ओर, औपनिवेशिक शासकों ने स्वयं नई दासवत् संस्थाओं को जन्म दिया - जैसे कि सड़क-निर्माण तथा खेती (रोपाई या वृक्षारोपण) के लिए विवशताजन्य मज़दूरों (forced labour) की परम्परा। उन्होंने कर प्रणाली की भी स्थापना की, जिसके फलस्वरूप कर अदा करने के लिए अफ्रीकियों को जो भी मज़दूरी मिलती थी उन्हें स्वीकार करनी पड़ती थी। इस प्रकार अनेक अफ्रीकियों को दासों (बंधुआ मज़दूरों) जैसा जीवन बिताने के लिए विवश होना पड़ा। इसके अतिरिक्त, जिन स्थानीय शासकों ने नए औपनिवेशिक प्रशासनों के साथ सहयोग किया उन्हें भी पूर्व ग़ुलामों तथा बंधक रहे व्यक्तियों के ऊपर कुछ नियंत्रण रखने का अधिकार मिला। अंत में, यद्यपि यूरोप के देशों ने ग़ुलामों के क्रय-विक्रय को अवैध घोषित कर दिया था, फिर भी इन कानूनों को लागू करना सदैव आसान नहीं था। अफ्रीका के कुछ भागों में अनेक वर्षों तक दासों का क्रय-विक्रय चलता रहा। कुछ भाग तो ऐसे थे जोकि बीसवीं शताब्दी के मध्य में उपनिवेशों के स्वतंत्र हो गए, परंतु उनमें दास-व्यवस्था जारी रही।

1.6.4 अफ्रीकी दास प्रथा की विशेषताएँ

अफ्रीका के लोगों ने केवल आर्थिक कारणों से ही ग़ुलामों को प्राप्त नहीं किया। बड़ी संख्या में ग़ुलामों के स्वामित्व को शक्ति और महत्व का प्रतीक माना जाता था।

अफ्रीकी दास-प्रथा का सीधा संबंध रक्त-संबंधी विषयों से था। यह एक प्रकार का पारिवारिक आधार था जोकि अधिकांश अफ्रीकी सभ्यता की प्राथमिक सामाजिक इकाई थी। पाश्चात्य दास-प्रथा की मुख्य विशेषता स्वतंत्रता से वंचित कर दिया जाना था। परन्तु, अफ्रीकी समाज में किसी विशेष रक्त-समूह से सम्बद्ध होना स्वयं में महत्वपूर्ण था। उनके लिए दास-प्रथा का अर्थ रक्त-समूह की हानि होना था। अफ्रीका में जिन लोगों को दास बनाया गया उन्हें रक्त-संबंधित अधिकारों तथा अन्य सुविधाओं से वंचित कर दिया गया। परन्तु आगे चलकर उन्हें अथवा उनकी संतानों को यह सुविधाएँ वापस मिल गई, क्योंकि वे अपने स्वामियों के रक्त समूह में शामिल हो गए।

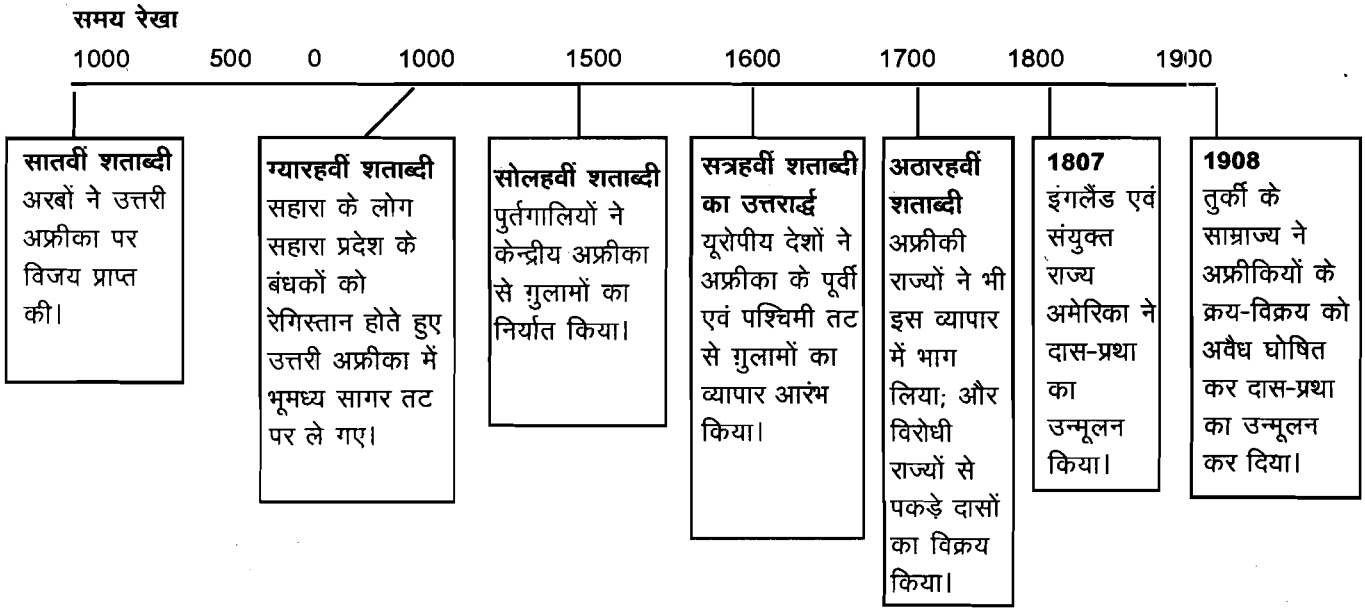

1.7 उपनिवेशवाद तथा अफ्रीका के लिए संघर्ष

दास-प्रथा के उन्मूलन तथा ईसाई सुधार आन्दोलनों से यूरोपीय देशों की अफ्रीकी राज्यों के आंतरिक मामलों में रुचि में वृद्धि हुई। अंततः दास-प्रथा-उन्मूलन के अभियान से अनेक यूरोपीय देशों को अफ्रीका में उपनिवेश स्थापित करने का बहाना मिल गया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उन्होंने अफ्रीका को अपने उपनिवेशों में विभाजित करना आरंभ कर दिया।

उपनिवेशवाद, जिसका अर्थ एक देश द्वारा अन्य देशों पर राजनीतिक एवं आर्थिक वर्चस्व स्थापित करना है, का अफ्रीका पर अत्यधिक प्रभाव रहा था। यूरोपीय देशों ने 15वीं से 19वीं शताब्दी तक अफ्रीका में रुचि लेनी आरंभ कर दी थी। ऐसा विशेषकर अफ्रीका के तटवर्ती क्षेत्रों में हुआ था। सागर तट के निकट यूरोपीय व्यापारिक केन्द्र स्थापित किए गए तथा स्थानीय लोगों के साथ वाणिज्य आरंभ हुआ। उन्होंने आंतरिक प्रदेशों की खोज करने के विशेष प्रयास नहीं किए। तब तक यूरोपीय देशों का प्रभाव अफ्रीका में काफी कम था। उसके पश्चात् (मध्य 17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक) यूरोपीय देशों की अफ्रीका में भागीदारी बढ़ गई, और उन्होंने आंतरिक क्षेत्रों की खोज आरंभ कर दी। इस महाद्वीप के असीम प्राकृतिक संसाधनों से प्रभावित यूरोपीय देशों ने वहाँ के संसाधनों का गंभीरता से उपयोग करना आरंभ कर दिया। अपने इस आर्थिक शोषण करने और लाभ कमाने के उद्देश्य से उन्होंने अफ्रीकी लोगों पर यातना देनी आरंभ कर दी, और उन्हें विदेशी शासन स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया। 1870 के दशक में विभिन्न प्रतिद्वन्द्वी यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों ने उपनिवेश प्राप्त करने के लिए आपसी होड़ आरंभ कर दी। 1880 के दशक के अंत तक यूरोपीय देशों ने अधिकांश अफ्रीका को आपस में विभाजित कर लिया था।

1.7.1 यूरोपीय विस्तार के प्रतिरूप

व्यापारियों ने अफ्रीका में सर्वप्रथम यूरोपीय बस्तियाँ स्थापित की थीं। 1870 के दशक के अंत तक अफ्रीका की ओर उद्यमी जैसे अन्य लोग भी आकर्षित होने लगे थे। इनमें से अधिकतर लोग धन एकत्र करने में या यूरोपीय संस्कृति का अफ्रीका में प्रचार-प्रसार करने में व्यस्त हो गए थे। उन्होंने अपनी सरकारों से आग्रह किया कि वे अफ्रीका में ऐसे उपनिवेश स्थापित करें जिनका प्रयोग कच्चे माल की आपूर्ति तथा यूरोपीय वस्तुओं के बाजारों के लिए किया जा सके।

उपनिवेश स्थापित करने और कच्चे माल की प्राप्ति की इच्छा ने अफ्रीका में छीना-झपटी या संघर्ष (scramble) का आरंभ किया। इंगलैंड, फ्रांस, बेल्जियम तथा पुर्तगाल में संघर्ष आरंभ हुए ताकि वे अफ्रीका में अपनी चौकियाँ स्थापित कर सकें। उन्होंने अफ्रीकी शासकों को ऐसी संधियों पर हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित किया जिनके द्वारा वे अपनी कुछ भूमि हस्तांतरित कर देते।

सन् 1884 और 1885 में अनेक यूरोपीय देशों के प्रतिनिधियों की बर्लिन में एक बैठक हुई जिसमें इस विषय पर चर्चा हुई कि कैसे वे आपसी प्रतियोगिता से बचकर, कुछ नियमों के अनुसार, अफ्रीका में विभिन्न प्रदेशों को छीनकर अपने उपनिवेश स्थापित कर सकें। उन्होंने आपस में अनेक संधियों पर हस्ताक्षर किए, जिनके अनुसार अफ्रीका का उपनिवेशों में विभाजन किया गया तथा उनकी सीमाएँ निर्धारित की गईं।

जैसे-जैसे यूरोपीय साम्राज्यवाद की गति में वृद्धि हुई वैसे-वैसे अफ्रीकी लोगों की चिंता बढ़ती गई। उन्हें इस बात का भय उत्पन्न हुआ कि कहीं यूरोपीय देश समस्त अफ्रीकी भूमि न छीन लें। इस कारण

अनेक सशस्त्र संघर्ष भी हुए। इनमे से कुछ संघर्ष तो औपचारिक युद्धों में परिवर्तित हो गए, क्योंकि यूरोप से अनेक कुशल और सशस्त्र एवं प्रशिक्षित सेनाओं ने अफ्रीका में भूमि प्राप्त करने के लिए आक्रमण किए। सन् 1919 तक केवल इथियोपिया और लाइबेरिया को छोड़कर शेष पूरे अफ्रीका पर यूरोपीय नियंत्रण स्थापित हो गए थे। यूरोपीय साम्राज्यवाद ने अब अपनी शक्ति मज़बूत कर ली और ऐसे प्रशासन स्थापित किए जो उपनिवेशों में शांति-व्यवस्था स्थापित करने के साथ-साथ शासक देशों को आर्थिक लाभ भी उपलब्ध करवा सकें।

1.7.2 अफ्रीका के लिए संघर्ष (छीना-झपटी)

अफ्रीकी प्रदेशों के लिए प्रतिद्वन्द्विता ने वास्तव में एक संघर्ष या छीना-झपटी का रूप ले लिया। अनेक अन्वेषक (खोजकर्त्ता), व्यापारी तथा साहसी योद्धा महाद्वीप के विभिन्न भागों में फैल गए तथा उन्होंने स्थानीय शासकों के साथ संधियों पर हस्ताक्षर किए। अनेक लोगों का विचार था कि इस आकस्मिक एवं असुनियोजित तरीके से परस्पर विरोधी दावों को बल मिलेगा। नवम्बर 1884 में जर्मन चांसलर बिस्मार्क ने बर्लिन में एक बैठक बुलाई ताकि अफ्रीका में उपनिवेशवाद का विवेचन किया जा सके। इसमें 14 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, तुर्की साम्राज्य (Ottaman Empire) तथा अधिकांश यूरोपीय देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए। उन्होंने बेल्जियम के राजा लेपोल्ड (Leopold) के द्वारा स्थापित "काँगो के स्वतंत्र राज्य" में मुक्त व्यापार तथा उसकी तटस्थता पर सहमति व्यक्त की। इस बैठक में जो मार्गदर्शक नियम निर्धारित किए गए उनमें यूरोपीय देशों को अफ्रीका के विभाजन में सहायता मिली।

अफ्रीका में यूरोपीय नीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष तो शायद वहाँ की औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था थी। उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व ही अफ्रीका में स्थानीय तथा विदेशी व्यापार की अवसंरचना स्थापित हो गई थी तथा यूरोपीय एवं अफ्रीकी व्यापारियों की भागीदारी लगभग एक समान थी। इस स्थिति में तब परिवर्तन हुआ जबकि यूरोपीय लोगों ने व्यापार एवं प्राकृतिक संसाधनों पर अपना नियंत्रण मजबूत करने के लिए कदम उठाए।

औपनिवेशिक देशों ने अफ्रीका के बाजारों को यूरोपीय सामान से भर दिया। परिणामस्वरूप अनेक अफ्रीकी उद्यम बंद हो गए, क्योंकि वे यूरोपीय माल से मुकाबला नहीं कर सके। यूरोप के देशों ने अफ्रीका में ऐसी फसलों को प्रोत्साहित किया जिनसे धनोपार्जन अधिक होता है जैसे कि कपास। धनोपार्जन करने वाली इन फसलों को नकदी फसलें (cash crops) कहा जाता है। प्रत्येक उपनिवेश ने एक फसल-विशेष में विशेष रुचि दिखाई। इस कारण कृषि के पारम्परिक तरीके नष्ट हो गए। कुछ उपनिवेशों में श्वेत कृषकों को विशेष सुविधाएँ प्रदान की गईं। उन्होंने अधिक उपजाऊ भूमि पर कब्जा कर लिया तथा अफ्रीकी किसानों के पास कम वांछनीय भूमि ही रह गई। कुछ औपनिवेशिक सरकारों ने तो स्थानीय अफ्रीकियों पर अतिरिक्त कर लगा दिए। अनेक अफ्रीकियों को अपनी भूमि छोड़कर श्वेत कृषकों के खेतों तथा खानों में काम करने के लिए बाध्य होना पड़ा ताकि वे कर अदा कर सकते।

1.7.3 अफ्रीकी समाज पर उपनिवेशवाद का प्रभाव

औपनिवेशिक सरकारों ने अफ्रीका में सड़कों, रेलमार्गों तथा बन्दरगाहों का निर्माण किया, उन्हें नई प्रौद्योगिकी से अवगत करवाया तथा और अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध करवाईं। परन्तु उनकी नीतियों के कारण पारम्परिक अर्थव्यवस्था की क्षति भी हुई तथा भूमि के स्वामित्व और श्रम व्यवस्था में भारी

परिवर्तन हुए। यद्यपि औपनिवेशिक शासन ने नए अवसर प्रदान किए (जैसे कि शिक्षा, नौकरियाँ तथा माल के लिए नए बाजार) परन्तु, साथ ही इसने अनेक लोगों को निर्धन एवं भूमिहीन भी बना दिया। इसके अतिरिक्त, निर्यात के लिए नकदी फसलों पर बल देने से अफ्रीकी समाज विदेशी राष्ट्रों पर निर्भर हो गया। उपनिवेशों के आपसी व्यापार को विकसित करने के लिए कोई प्रयास नहीं किए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि आज भी अनेक अफ्रीकी राष्ट्र पड़ोसी देशों की अपेक्षा विदेशों से कहीं अधिक व्यापार करते हैं।

औपनिवेशिक शासन ने उन पारम्परिक अफ्रीकी राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाओं को भी नष्ट किया जिनके विकास में कई शताब्दियाँ लगी थीं। यूरोपीय साम्राज्यों के विस्तार के साथ-साथ तत्कालीन राज्यों को नष्ट कर दिया गया, तथा अनेक जातीय समूहों को या तो नष्ट कर दिया गया या फिर उनमें से कुछ को इकट्ठा कर दिया गया। जिन उपनिवेशों की उन्होंने स्थापना की वे ऐसे अफ्रीकी राष्ट्रों के रूप में उभरे जिनमें परस्पर विरोधी समूह थे। साथ ही, यूरोपीय शक्तियों ने पारम्परिक अफ्रीकी शासकों और क़बीलाई नेताओं के सामाजिक एवं राजनीतिक नियंत्रण को भी नष्ट कर दिया। परन्तु, उनके स्थान पर कोई उचित सत्ता स्थापित करने में वे असफल रहे। अंतिम, यूरोपीय औपनिवेशिक शासकों ने अफ्रीका में पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता को महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया। आज भी अफ्रीका के अधिकांश स्कूल और विश्वविद्यालय यूरोपीय शिक्षा एवं धर्म व्यवस्था पर आधारित हैं। परन्तु पाश्चात्य संस्कृति के अन्य पक्ष अपनी पकड़ नहीं बना सके।

समय रेखा

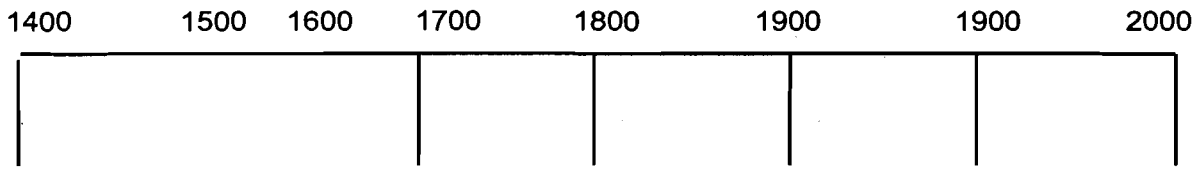

पन्द्रहवीं शताब्दी का अंतिम भाग
अरब अपने साथ अफ्रीका में इस्लामी धर्म और संस्कृति लाए।

अठारहवीं शताब्दी
यूरोपीय धर्म-प्रचारक ईसाई धर्म और पाश्चात्य संस्कृति के प्रसार के लिए आए।

1787
अंग्रेजों ने स्वतंत्र हुए ग़ुलामों के लिए सिएरा लियोन में एक उपनिवेश स्थापित किया।

1884-85
यूरोपीय देशों का बर्लिन सम्मेलन जिसमें अफ्रीका के विभाजन का निर्णय किया गया।

1914
लाइबेरिया और इथियोपिया को छोड़कर शेष अफ्रीका पर यूरोपीय नियंत्रण।

1956-75
अधिकांश अफ्रीकी देश स्वाधीन राष्ट्र बने।

1.8 आधुनिक अफ्रीका

1957 से 1993 की अवधि में लगभग 50 अफ्रीकी राज्य स्वतंत्र हो गए। 1960 के दशक के अंत में कच्चे माल की प्राप्ति और आधारिक संरचना (infrastructure) पर व्यय करने के लिए नए पूँजी निवेश किए गए। लगभग सभी नवोदित अफ्रीकी राज्यों का अपने इतिहास पर कुछ न कुछ दावा है। यह प्रक्रिया चल रही है, तथा इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव देखे जा सकते हैं: ऐसा नई संस्थाओं के स्थायित्व तथा प्रभावी स्वदेशी राजनीतिक और आर्थिक संरचना की स्थापना में पाया जाता

है; या फिर नकारात्मक रूप से, अनेक प्रकार की उथल-पुथल, सरकारों के आकस्मिक परिवर्तन तथा पिछले कुछ वर्षों की अस्थिरता में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, यह कहा जाता है कि 1960 का दशक "असंतोष का समय" था क्योंकि स्वतंत्रता से बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ की गई थीं। परन्तु यह भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि 1960 का दशक बहुमूल्य और आवश्यक प्रायोगिक परीक्षण का समय था। अनेक नवोदित देशों को आज भी अपर्याप्त और पुरानी (outmoded) संरचनात्मक धरोहर के साथ चलना पड़ रहा है। इसके कारण आर्थिक कठिनाइयाँ और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होती है; तथा कभी-कभी घोर विपत्ति भी आ जाती है। 1973-75 में उत्तर-पूर्वी अफ्रीका, विशेषकर साहेल क्षेत्र में, भीषण सूखा पड़ा था। यह क्षेत्र सहारा रेगिस्तान और पश्चिमी अफ्रीका के वनों के बीच स्थित है। यह उल्लेखनीय है कि इस भीषणता का सामना करने में सबसे प्रमुख भूमिका सोमालिया ने निभाई, जो स्वयं सूखे की लपेट में था और नए सामाजिक-आर्थिक संरचना के क्रान्तिकारी परिवर्तनों से भी जूझ रहा था। 1980 के दशक में अनेक ऐसी प्रवृत्तियाँ देखी गईं जो परस्पर विरोधी थी क्योंकि उन्होंने कभी संघर्ष को तो कभी शांति को जन्म दिया। समस्त दक्षिणी और अधिकांश केन्द्रीय अफ्रीका में दीर्घकालीन तनाव उत्पन्न हुए जिनकी पृष्ठभूमि में बहुसंख्यक राष्ट्रवाद की सरकारें और अनेक आन्दोलन थे। इन तनावों ने गंभीर ध्रुवीयता की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। एक अन्य घटनाक्रम में तन्ज़ानिया, बोत्सवाना एवं ज़ाम्बिया के नेताओं और मोज़ाम्बीक तथा अंगोला के नए नेताओं के मध्य सहयोग का जन्म हुआ।

1974 में इथियोपिया के सम्राट का तख्ता पलटे जाने के पश्चात् हॉर्न ऑफ अफ्रीका (Horn of Africa) में एक और संघर्ष उत्पन्न हुआ। इथियोपिया के नए उभरते शासकों ने देश के समाज में दूरगामी संरचनात्मक परिवर्तनों की माँग की। इनमें सबसे प्रमुख थे क्रांतिकारी भूमि सुधार। 1976-77 में ओगादेन (Ogaden) में पश्चिमी सोमाली स्वतंत्रता मंच के द्वारा आत्मनिर्णय का अधिकार प्राप्त करने के लिए बल-प्रयोग का मार्ग अपनाया गया। इस आन्दोलन को निकटवर्ती सोमाली गणतंत्र से समर्थन मिला। आरंभ में तो यह आन्दोलन सफल होता दिखाई दिया, परन्तु बाद में सोवियत शस्त्रास्त्रों की सहायता से इथियोपिया के सैन्य बलों द्वारा क्यूबा के सैनिकों ने विद्रोह को कुचल दिया। साथ ही इथियोपिया की सेना ने इरीट्रिया (Eritrea) को उसके स्वतंत्रता आंदोलन से मुक्त करवाने के लिए प्रबल हमला बोला। जिस समूह के विरुद्ध इथियोपिया ने सैनिक कार्रवाई की वह था इरीट्रिया का जनतांत्रिक स्वतंत्रता मंच (Eritrean People's Liberation Front (EPLF)। इस सैनिक कार्रवाई के फलस्वरूप इथियोपिया की सेना का 1978 के अंत में पुनः इरीट्रिया के प्रमुख नगरों पर कब्जा हो गया, परन्तु 1979 के मध्य में इरीट्रिया ने ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति प्राप्त कर ली, और युद्ध जारी रहा।

इसके विपरीत, पश्चिमी अफ्रीका में 1975 में आर्थिक सहयोग की बहु-राष्ट्रीय नई संधि पर हस्ताक्षर किए गए जिसने उस क्षेत्र के एकीकरण की नई प्रवृत्तियों को बढ़ावा दिया। इस संधि पर लागोस में हस्ताक्षर किए गए, तथा इसके द्वारा पश्चिम अफ्रीकी राज्यों के आर्थिक समुदाय (Economic Community of West African States – ECOWAS) की स्थापना हुई। पन्द्रह देश इस बात के लिए सहमत हुए कि वे "विभिन्न चरणों में" सीमा शुल्क को समाप्त करेंगे, आंतरिक व्यापारिक प्रतिबंधों को दूर करेंगे, तथा अंततः गैर-सदस्य देशों के प्रति साझी आयात-निर्यात और वाणिज्य नीति अपनाएँगे। जिन देशों ने इस समुदाय की स्थापना में योगदान दिया वे थेः मॉरीटेनिया, सेनेगल, गैम्बिया, गिनी-बिसाऊ, गिनी, सिएरा लियोन, लाइबेरिया, नाईजीरिया, आइवरी कोस्ट, माली, अपर वोल्टा, घाना, टोगो, बेनिन (पूर्व दहोमी) तथा नाईजर।

1.9 सारांश

इस इकाई में अफ्रीका महाद्वीप के उदभव और उसके राजनीतिक एवं सामाजिक विकास का प्राचीन समय से आधुनिक समय तक वर्णन किया गया है। इसमें अफ्रीका के उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी तथा केन्द्रीय एवं दक्षिणी क्षेत्रों की व्याख्या की गई है।

अफ्रीका में प्रथम 100 ईस्वी वर्षों (first millennium A.D.) में अनेकों राजतन्त्रों की स्थापना हई। अरब नगर मक्का में 610 ई. में इस्लाम धर्म का उदय हुआ। इस धर्म की स्थापना पैग़म्बर मोहम्मद साहब ने की थी। इस्लाम का अफ्रीका के राजनीतिक और सामाजिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। राजनीतिक और सैन्य शक्ति के रूप में इसने अफ्रीका के विशाल प्रदेशों में एकता स्थापित की। अब भी इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि इस्लामी कानूनों को अपना लिया जाए ताकि उसके वैधानिक, धार्मिक और सामाजिक पक्षों का पारम्परिक प्रक्रियाओं के साथ समन्वय किया जा सके।

अफ्रीका को दास-व्यापार की भीषण व्यथा भी झेलनी पड़ी थी। ग़ुलामों के व्यापार के द्वारा अन्य महाद्वीपों में अफ्रीकी जनसंख्या का आप्रवास हुआ, तथा अफ्रीकी समाज कमजोर हुए। नैतिक आक्रोश के कारण 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यूरोपीय देशों में दास-प्रथा के उन्मूलन के लिए आन्दोलन हुए। दास प्रथा की समाप्ति के प्रयासों का बहाना बनाकर यूरोपीय देशों ने अफ्रीकी प्रदेशों को अपने राजनीतिक नियंत्रण में लेना आरंभ कर दिया। फलस्वरूप, अफ्रीकी महाद्वीप अंततः का उपनिवेशों में विभाजन हो गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात्, अफ्रीका में राजनीतिक परिवर्तनों को गतिशीलता मिली। यूरोपीय देशों के लिए अपने अफ्रीकी उपनिवेशों को आत्म-निर्णय के अधिकार से वंचित रख सकना कठिन हो गया। साथ ही वित्तीय दबाव में भी वृद्धि हुई, जिसके कारण औपनिवेशिक साम्राज्यों को जीवित रखना आवश्यक हो गया था। स्वाधीनता आन्दोलनों के विकास और राजनीतिक दलों की स्थापना से लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुईं, तथा 1957 से 1993 की अवधि में अनेक अफ्रीकी राज्यों ने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

1.10 अभ्यास

1. अफ्रीका में इस्लाम के उद्भव और उसके विस्तार का चित्रण कीजिए।
2. दास प्रथा की स्थापना के लिए उत्तरदायी कारण क्या थे तथा बाद में किन कारणों से इसका उन्मूलन हुआ?
3. उपनिवेशवाद तथा अफ्रीका के लिए संघर्ष का संक्षेप में वर्णन कीजिए।